शब्दालंकार

नाम - डॉ० अंजु
हिन्दी विभाग
वैशाली महिला महाविद्यालय

(6) श्लेष अलंकार → श्लेष अलंकार में शब्दालंकार का भेद है। श्लेष शब्द का अर्थ होता है 'चिपका हुआ' अथवा जुड़ा हुआ। जब कभी किसी काव्य पंक्ति में किसी शब्द को एक बार ही लिखा जाये परंतु बार-बार पढ़ने पर उसके एक से अधिक अर्थ निकलते हैं, तब वहाँ पर श्लेष अलंकार प्रयुक्त होता है।

उदाहरण →

चरण धरत चिंता करत, चितवत चारिहुँ ओर।
सुवरन को खोजत फिरत, कवि व्यभिचारी चोर।

उपर्युक्त काव्य पंक्ति में 'सुवरन' शब्द के तीन अर्थ निकल कर सामने आते हैं प्रथम सुवरन का अर्थ अच्छे सुंदर शब्द, द्वितीय सुवरन का अर्थ सुंदर स्त्री और तृतीय सुवरन का अर्थ स्वर्ण से है। रचनाकार का आशय यह है कि बार बार टहलते हुए एवं सोचते हुए कवि, व्यभिचारी तथा चोर किसी भी तरह सुवरन को

05 SUNDAY

Optimism is the faith that leads to achievement. - Helen Keller

Scanned with CamScanner

प्राप्त करने की मंशा रखते हैं। एक कवि के सुवरन सुंदर वर्ण तथा काव्य, एक व्यभिचारी के लिए सुंदर स्त्री सुवरन है तथा एक चोर के लिए सुवरन सोना होता है और ये तीनों ही अपना भरपूर प्रयास करके सुवरन को प्राप्त करने की ताक में लगे रहते हैं।

अर्थालंकार

जब किसी कविता में विशेषता उसके शब्दों में न होकर; उसके अर्थ में छुपी हुई होती है, वहाँ अर्थालंकार प्रयुक्त होता है। अर्थालंकार के प्रमुख रूप से निम्नलिखित भेद हैं—

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार
4. भ्रांतिमान अलंकार
5. संदेह अलंकार
6. अन्योक्ति अलंकार
7. विभावना अलंकार
8. मानवीकरण अलंकार
9. अतिशयोक्ति अलंकार

1. उपमा → जब किसी पंक्ति में दो वस्तुओं के बीच अत्यधिक समानता के कारण उनकी तुलना की जाती है, वहाँ पर उपमा अलंकार प्रयुक्त होता है। यहाँ पर वाचक शब्दों का प्रयोग प्रत्यक्ष रूप से किया

उदाहरण के लिए- "पीपर पात सरिस
मन डोला।"

यहाँ पर मनुष्य के मन की तुलना पीपल के पत्ते से की गई है। वाचक शब्द में 'सरिस' शब्द का प्रयोग यहाँ पर किया गया है। कवि के अनुसार मन के डोलने अथवा विचरने की गति को पीपल के पत्ते के झूमने की गति के समान बताया गया है।

2. रूपक अलंकार ⇒ जब किसी काव्य में गुण में अत्यंत समानता के कारण उपमेय में उपमान का भेद आरोपित कर दिया जाए, वहाँ रूपक अलंकार प्रयुक्त होता है। यहाँ पर वाचक शब्द का प्रयोग नहीं होता है।

उदाहरण → चरण कमल बन्दौं हरि राइ।

यहाँ पर भगवान विष्णु के चरणों को कमल माना गया है। यहाँ पर तुलना न करते हुए, हरि चरणों को कमल का रूप मान लिया गया है। यहाँ पर वाचक शब्द अनुपस्थित है।

3. उत्प्रेक्षा अलंकार → जब किसी काव्य में किसी विशेष गुण अथवा धर्म आदि की समानता के कारण किसी रूप की कल्पना की

Scanned with CamScanner

जाती है अथवा उसके वैसा होने की संभावना प्रकट की जाती है। तब वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार प्रयुक्त होता है। इसमें वाचक शब्द के रूप में मुख्यतः जनु, मनु, ज्यों, जानहु आदि का प्रयोग किया जाता है।

उदाहरण -)

सोहत ओढ़े पीत पट, स्याम सलोने गात,
मानहु नीलमणि सैल पर, आपत परयो प्रभात।

उपर्युक्त पंक्तियों में श्रीकृष्ण के बाल रूप जब पीले वस्त्र मुस्कान बिखेरते हैं, तब उसके प्यारे गाल इतने सुंदर जान पड़ते हैं, मानो प्रातः काल के वक्त नीलमणि पर्वत स्वयं सामने खड़ा चमक रहा है।

Scanned with CamScanner